AL· HAFEEZ COLLEGE, ARRAH.

ONLINE CLASSES

HISTORY LECTURES (PDF)

Dr. Md. Manjar Ali
Asst. Prof. Dept. of History
AL-Hafeez College, Ara.
Email: Manjar.ali18@gmail.Com.

UG-2 - DELHI SULTANATE

GHIYAS Ud DIN BALBAN
1266 — 1286 (20 years)

Scanned by CamScanner

गयासुद्दीन बलबन - 1266 - 1286 ई० तक

BALBAN

- बलबन का वास्तविक नाम 'बहाउद्दीन' था।
- युवावस्था में उसने मंगोलों के बच्चे के रूप में जीवन व्यतित किया।
- मंगोलों ने उसे बसरा के 'ख्वाजा जमालुद्दीन' के हाथों में बेच दिया।
- जमालुद्दीन ने उसकी अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध किया।
- इसके बाद उसे दिल्ली लाया गया जहाँ 1232 ई० में उसे इल्तुतमिश के हाथों बेच दिया गया।
- इल्तुतमिश ने उसकी स्वामिभक्ति व योग्यता से प्रभावित होकर उसे 'चालीस अमीरों के दल' में सम्मिलित कर लिया था।
- इल्तुतमिश ने बलबन को 'खास दरबार' के पद पर नियुक्त किया था।
- सुल्ताना रजिया के शासन काल में बलबन को 'अमीर-ए-शिकार' का पद मिला।
- नासिरुद्दीन ने बलबन को 'उलूग खाँ' (महान) 'नायब-ए-मुमालिक' पदों से विभूषित किया।

Notes

We are attitude former whether we like it or not.

Scanned by CamScanner

बलबन दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था जिसने सुल्तान के पद और अधिकारों के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विचार प्रकट किए थे।

सत्ता पर बैठने के बाद बलबन के समक्ष समस्याएँ।

1. साम्राज्य के संगठन की समस्या
2. दरबार में दलबन्दी
3. चालीस गुलामों के गुट का दमन
4. मेवातियों का दमन
5. मंगोलों का आक्रमण

बलबन के शासन काल में किस तुर्क सरदार ने सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह किया है।

एकमात्र तुर्क सरदार तथा बलबन द्वारा नियुक्त बंगाल के शासक "तुगरिल खाँ" ने जो कभी बलबन का गुलाम रह चुका था; सुल्तान के विरुद्ध मयकर विद्रोह कर दिया था।

बलबन ने इस विद्रोह का दमन के लिए अमीन खाँ, तिरमती, सहाबुद्दीन की अध्यक्षता में बारी-बारी से तीन बार सेना भेजी, किन्तु एक को भी सफलता नहीं मिली।

Notes

अतः में स्वयं बलबन ने इस विद्रोह का दमन किया। बलबन ने मलिक मुकद्दीर, द्वारा तुगरिल खाँ का वध करवा दिया।

Scanned by CamScanner

- बलबन ने दरबार में सुल्तान का अभिवादन करने के लिए 'सिजदा' और 'पैबोस' की नियम जारी किया। जिसका क्रमशः अर्थ होता है कि सिर झुकाकर अभिवादन करना और आदर भाव से पैर या कदम चूमना।

- उसने सुल्तान की प्रतिष्ठा स्थापित करने हेतु "रक्त एवं लौह नीति" अपनाई।

- बलबन ने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नवरोज उत्सव को प्रारंभ किया।

- मंगोलों का दिल्ली सल्तनत पर आक्रमण बलबन के काल में प्रारंभ हुआ।

बलबन का शासन-प्रबन्ध

- बलबन के सामने अनेक समस्याएं मौजूद थी इनके निराकरण के लिए बलबन ने सर्वप्रथम एक कठोर एवं सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की।

(1) राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्त — बलबन के समक्ष सर्वप्रथम कार्य सुल्तान की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना था -बलबन ने सल्तनत विरोधी तत्वों का विनाश कर 'राजत्व के दैवीय सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया।
उसके सिद्धान्त के अनुसार सुल्तान को उसने ईश्वर का प्रतिनिधि माना जिसकी तुलना जनसाधारण से नहीं की जा सकती।

- उसने तुर्कों के उच्चतम परिवारों के साथ सम्बन्ध जोड़े, तथा

Scanned by CamScanner

साधारण लोगों से अलग एकान्त का जीवन व्यतीत करने लगा।

- उसने मद्यपान तथा लोगों के साथ आमोद-प्रमोद बन्द कर दिया।
- वह सदा गम्भीर रहता तथा मुस्कराहट उसके मुख पर दिखाई नहीं पड़ती थी।
- राजदरबार में किसी को हँसने की अनुमति नहीं थी।
- सुल्तान के शान-शौकत व कठोर नीति के कारण अमीर भी उसके प्रभाव में आने लगे।

(2) चालीसा मण्डल का दमन — चालीसा मण्डल का विनाश करने का निश्चय किया। दमन करने के लिए प्रजा की दृष्टि में गिराने के लिए भी कठोर दण्ड दिए। कुछ को कूटनीति के द्वारा तथा शेष को विष देकर सफाया कराया।

(3) उलेमाओं की उपेक्षा — बलबन उलेमाओं का सम्मान करता था तथा उनसे परामर्श लेता था, परन्तु केवल धार्मिक मामलों में, राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार छिन लिया था।

(4) सशक्त केन्द्रीय शासन — केन्द्रीय-शासन को सुदृढ़ बनाना बलबन आवश्यक समझता था क्योंकि तब ही प्रान्तीय राज्यों पर अंकुश लगाया जा सकता था। बलबन आकृति पर विशेष ध्यान देता था कि किसी निम्नवंशीय व अयोग्य व्यक्ति को उच्च पद पर नियुक्त न किया जाए।

(5) हिन्दुओं के प्रति नीति — उलेमाओं को राजनीति से अलग कर दिया था, किन्तु हिन्दू जनता की स्थिति पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

God provides the wind, but man must raise the sails.

हिन्दू जनता की सल्तनत काल में स्थिति कभी भी अच्छी नहीं रही।

Scanned by CamScanner

(6) शक्तिशाली सेना — शक्तिशाली सैन्य-संगठन की ओर विशेष ध्यान दिया। सेना का सर्वोच्च अधिकारी 'इमाद-उल-मुल्क' को बनाया। उसने पुराने दुर्गों की मरम्मत करवाया तथा नवीन दुर्गों को निर्माण करवाया ताकि मंगोलों का कुशलतापूर्वक सामना किया जा सके। इन दुर्गों में भटिण्डा - दीपालपुर आदि दुर्ग थे।

(7) गुप्तचर व्यवस्था — विशाल साम्राज्य पर निरंकुशता पूर्वक शासन करने के लिए सहायक गुप्तचर व्यवस्था का होना आवश्यक है।

(8) न्याय व्यवस्था — बलबन अत्यन्त न्यायप्रिय शासक था इसलिए उसने निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था की स्थापना की। न्याय करते समय वह अमीर, गरीब, रिश्ते-नाते आदि का ध्यान न रखता था।

बलबन की सैनिक उपलब्धियाँ

उल्लेखनीय है कि गुलाम-वंशीय शासन काल के दौरान किसी भी शासक ने नवीन राज्यों को नहीं जीता और न केवल उन प्रदेशों की पुनर्विजय में ही लगे रहे जिन्हें गोरी ने जीता था। बलबन ने भी नवीन प्रदेशों को प्राप्त करने के मार्ग का अनुसरण नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से मंगोल आक्रमण की सम्भावना बढ़ जाती।

(1) मेवातियों का दमन — अपने प्रधानमन्त्रित्वकाल में बलबन ने मेवातियों का दमन किया।

2. दोआब में विद्रोहियों का दमन — मेवातियों के भांति दोआब के राजपूत भी तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह करते रहते थे।

Life is 10 per cent what you make it and 90 per cent how you take it.

Scanned by CamScanner

दोआब में कम्पिल, भोजपुर, पटियाली, बदायूँ तथा अमरोहा आदि इनके गढ़ थे। सेना के साथ विद्रोह किया और विनाश किया।

3. कटेहर में विद्रोह का दमन - जियाउद्दीन बरनी ने लिखा है कि जब बलबन पटियाली, भोजपुर व कम्पिल के विद्रोहों को कुचलने में व्यस्त था, तभी उसे कटेहर में हिन्दुओं द्वारा विद्रोह किए जाने की सूचना मिली। बलबन ने अत्यन्त कठोर नीति का पालन ~~किया~~ करते हुए सभी हिन्दुओं की हत्या कर दी व ~~खून~~ खून की नदियाँ बहा दीं।

(4) बंगाल में विद्रोह - बंगाल में उस समय तुगरिल खाँ शासन कर रहा था जो बलबन का अधीन था। 1279 ई. में तुगरिल खाँ ने विद्रोह कर दिया तथा सुल्तान की उपाधि धारण की। उसने अपने नाम के सिक्के भी जारी किये। तत्पश्चात बलबन ने अपने पुत्र बुगरा खाँ को बंगाल का शासक नियुक्त किया तथा उसे भी विद्रोह न करने की चेतावनी दी।

~~बलबन के पुत्र की मृत्यु~~ - 1286 ई. में मंगोलों ने पुनः आक्रमण किया। इस बार उनके विरुद्ध युद्ध में बलबन का बड़ा पुत्र मुहम्मद खाँ मारा गया, किन्तु दोनों को दूर रखने में बलबन की सेनाएँ सफल रहीं।

Notes

बलबन की मृत्यु - बलबन को मुहम्मद खाँ की मृत्यु से तीव्र आघात पहुँचा। शीघ्र ही 1286 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।

Scanned by CamScanner

बलबन का उत्तराधिकारी -

बलबन का उत्तराधिकारी अत्यन्त निर्बल प्रमाणित हुआ। बलबन ने अपना उत्तराधिकारी अपने बड़े लड़के मुहम्मद खां के पुत्र 'कैखुसरो' को घोषित किया था किंतु बलबन की मृत्यु के पश्चात अमीरों ने बलबन के छोटे पुत्र बुगरा खां के पुत्र 'कैकुबाद' को राजसिंहासन पर बैठाया। कैकुबाद मुईजुद्दीन के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ।

- जून 1290 ई. में कैकुबाद की हत्या कर दी गयी। और इस प्रकार गुलाम-वंश के शासन का पतन हो गया।

बलबन का दरबार

बलबन साहित्य एवं विद्या का संरक्षक था। यही कारण रहा होगा कि उसका दरबार में अनेक विद्वानों यथा शेख बदरुद्दीन बजारिया, शेख मजुद्दीन, बदरुद्दीन गजनवी, काजी कुतुबुद्दीन, सैयद मोईनुद्दीन, मौलाना हमीदुद्दीन मुतरिज और प्रांपात एवं अमीर खुसरो आदि से परिपूर्ण था।

- 'तूतिये हिन्द' अमीर खुसरो को कहा जाता है।

विभाग -

दीवान-ए-अर्ज (सैनिक विभाग)

~~बलबन~~ के

Notes

बलबन के शासन काल में 'फरीद' सुल्तान कहलाते थे

Scanned by CamScanner

सुल्तान अलाउद्दीन मसूदशाह ने 'अमीर-ए-हाजिब' का पद पर बलबन को प्रदान किया था

- बलबन ने सिक्कों पर 'जिल्ले इलाही' (अल्लाह की छाया) उत्कीर्ण कराया था तथा मद्यपान बन्द करवाया था

- बलबन के समय में वजीर महत्वहीन हो गया था।

- कैकुबाद के लकवाग्रस्त हो जाने पर उसके तीन वर्षीय पुत्र 'कैयुमर्स' को सुल्तान बनाया गया।

Notes

Md Manjar Ali